मृत्यु रेल में यात्रा

लेखक:
मोसस सी. ओनवुबिको

ग्रेस इवेन्जिलिस्टिक मिनिस्टरीज़, इनको.
नेशविली, टेन्निस्सी यू.एस.ए.

मृत्यु रेल में यात्रा

जरा सोचिए आप एक रेल गाड़ी में यात्रा कर रहे है जो मृत्यु केम्प की ओर जा रही है, इसके सभी यात्रीगण, जिसमें आप भी है दण्डित किए गए और सज़ा के लिए ले जाए जा रहे है।

जब रेल गाड़ी गन्तव्य स्थान के निकट पहुँचने ही वाला था, कि एक जवान व्यक्ति को आगे पटरी पर देखा गया। वह लाल झण्डा फहरा रहा था, मानो रेल गाड़ी को रोकने का संकल्प किया है। संचालक बड़े प्रयत्न से ही रेल गाड़ी को रोक पाया, तुरन्त उस व्यक्ति से अधिकारीयों ने पूछताछ किया और जाना उसकी अदभुत विनती के बारे में–कि वह इस रेल के सभी यात्रीयों के बदले में मरना चाहता है! *"मै यहाँ इस मृत्यु दण्ड को रोकने आया हूँ"* उस जवान व्यक्ति ने बड़े ही वीरता से कहा। आश्चर्य चकित अधिकारीयों ने इस विचित्र धटना का विवरण शीध्र ही न्यायाधीश को बताया जिन्होंने यह आदेश दिया था।

इस जवान व्यक्ति की पूरी तरह जॉच करने के बाद न्यायाधीश सहमत हुआ कि सभी दण्डित यात्रीयों के बदले में इस जवान को मृत्यु दण्ड दिया जाये, क्योंकि इस व्यक्ति की कोई भी अपराधिक रिकार्ड नही है। वह निर्दोष होने पर भी, सब लोगों के मृत्यु दण्ड को उठाने के लिए सहर्श तैयार है।

दोषी लोगों के प्रति उसका प्रेम प्रकट हुआ

उसको मृत्यु दण्ड के लिए ले जाया गया, जब सब लोग और आप भी यह देख रहे थे। वह सताया गया और पीड़ित किया गया उन सब लोगों के बदले जो मृत्यु के निकट पहुँच गए थे। मैं यह चाहता हूँ कि एक क्षण आप इस प्रतिमूरत के बारें में सच्चाई से सोचे, कैसा अथाह प्रेम है कि कोई अपने आप पूर्णतः मृत्यु दण्ड के लिए अर्पण करता है। इस निर्दोष जवान व्यक्ति

को मृत्यु कैम्प में जब पेड़ पर लटकाया गया, वह दर्द के कारण जोर-जोर से चिल्लाने लगा, मदद के लिए भी उसने पुकारा, परन्तु किसी भी प्रकार की मदद नही मिली और अन्ततः उसने अपनी अन्तिम सांस ली, क्यों? इसलिए कि जो रेल गाड़ी के अन्दर है वे सब बचाये जाए और जीवित रहे। इस व्यक्ति के बलिदान के बदले में न्यायाधीश ने आदेश दिया था कि इस रेल गाड़ी के लोगों को क्या करना चाहिए जिस से वे स्वतन्त्र किये जा सकते है।

सच्चाई

यह केवल कहानी मात्र नही है, यह एक उदाहरण है जिसे बाइबल साफ सिखाती है। ***"सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है"*** **(रोमियों 3:23)**। और ***"पाप की मज़दूरी मृत्यु है"*** **(रोमियों 6:23)**। यह निर्णय स्वर्ग के उच्चतम न्यायालय की ओर से पारित हुआ है, कि प्रत्येक जो पाप करते है वे दोषी है, उन सबकी सज़ा नरक है। अर्थात् वे परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग कर दिये जाते है। प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी पक्षपात के परमेश्वर के न्याय के आधीन है- मानव जाती इस मृत्यु रेल में अनन्त विनाश की ओर जा रहा है।

मानवीय प्रयास

बाइबल में इस बात का खण्डन किया गया है, कि मनुष्य अपने आपको परमेश्वर के सामने भले होने का प्रयत्न करता है। कोई यह कह सकता है, "मैं तो भले होने का प्रयत्न करता हूँ"। बाइबल कहती हैः ***"कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं"*** **(रोमियों 3:12)**। इस वचन के आधार पर यह व्यक्ति कहाँ तक ख़रा है? फिर कोई दूसरा व्यक्ति यह कह सकता है, *"मैं तो परमेश्वर के आज्ञाओं को मानने का प्रयास करता आया हूँ"*।

इसका भी उत्तर बाइबल देती है, *"क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों मे दोषी ठहरा"*। (याकूब 2:10)

प्रश्न यह है कि, परमेश्वर की कितनी आज्ञाओं को मानने से स्वर्ग जाने की अनुमति प्राप्त कर सकते है? प्रत्येक आज्ञाओं को मानने से! किसी भी एक आज्ञा के मानने में चूक जाने का अर्थ है सब आज्ञाओं के मानने में भी योग्य नही है (याकूब 2:10)। कौन सब बातों में सिद्ध हो सकता है? कौन पूरा दिन या सप्ताह या वर्ष, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किये बिना रह सकता है? वास्तव में सच्चाई यह है:

"कोई भी धर्मी नही है, एक भी नही है"। (रोमियों 3:10)

कोई फिर यह कह सकता है, कि वह धर्मी जीवन जीने का प्रयास कर रहा है। परन्तु बाइबल यह स्पष्ट कहती है:

"हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे ध र्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं"। (यशायाह 64:6)

यह किसी भी मनुष्य के लिए स्पष्ट रूप से अच्छा समाचार नही है। परमेश्वर की स्वीकृति को प्राप्त करने की मनुष्य की सभी प्रयास को व्यर्थ ठहरा दिया गया है। क्या बचा है हमारे पास? कुछ भी तो नही है। परमेश्वर की ओर से इस खण्डन का अर्थ क्या कोई भी मनुष्य स्वर्ग नही जा सकता है? ऐसा नही है। इसका अर्थ तो केवल यह है कि मनुष्य का प्रत्येक प्रयास व्यर्थ ही है। एक मात्र आशा और एक मात्र समाधान तो केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही है।

मृत्यु रेल में यात्रा

मानव जाती अपनी निसहाय परिस्थिति में है

प्रभु परमेश्वर जो सृष्टि का कर्ता है वह पवित्र है, वह पूर्णतय धर्मी है और एक सिद्ध न्यायी परमेश्वर है। वह अपनी पवित्रता के कारण पाप या पापियों के साथ सहभागिता नही रख सकता है (1यूहन्ना 1:5)। एक न्यायी परमेश्वर होने के कारण वह पाप को दण्डित किये बिना नही रह सकता है। ऐसा कोई भी मार्ग नही है जिससे एक दोष युक्त व्यक्ति, सर्व सिद्ध परमेश्वर के साथ सहभागिता रख सके, यह मानव के प्रयासों से पूर्णतः असम्भव हैः

"मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है" (मत्ती 19:26)।

अर्थात, मानव जाती अपने सब प्रयासों द्वारा भी परमेश्वर की पवित्रता के निकट कभी भी नही पहुँच सकती है। कोई सोचता है कि वह अच्छा है परन्तु परमेश्वर कहता है, ***"कोई भी भलाई नही करता है"*** **(रोमियों 3:12)**। दूसरा व्यक्ति सोचता है वह अच्छा जीवन जी रहा है, परमेयवर का उत्तर है, ***"कोई भी धर्मी नही है"*** **(रोमियों 3:10)**। तीसरा व्यक्ति सोचता है, परमेश्वर की व्यवस्था को मानने से वह घर्मी ठहराया जाएगा, परमेश्वर का उत्तर हैः

"मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहराया नहीं जाता है"(गलतियों 2:16)।

वास्तव में परमेश्वर के ईश्वरीय न्याय जो प्रत्येक पर है उससे बचने का मनुष्य का सब प्रयास समाप्त हो गया है (रोमियों 3:23)। उसके न्याय से बचने का कोई मार्ग नही है। सबका न्याय हो चुका है, सब दोषी पाये गये है और अनन्त नरक के लिए दण्डित किये गये है। इस दण्ड से बचने के लिए कोई भी व्यक्ति कितना ही प्रयास क्यों न कर लें उसके लिए यह असम्भव

है। क्या इसका यह मतलब है कि परमेश्वर के न्याय से बचने के लिए हमें कोई आशा नही है? वास्तव में ऐसा नही है, परमेश्वर के पास मानव जाती को बचाने के लिए केवल एक ही योजना है, वह है अनुग्रह की योजना। इस अनुग्रह की योजना का पालन करने से ही मनुष्य स्वतंत्र हो जाएगा, या फिर तिरस्कृत करने के कारण परमेश्वर की अनन्त क्रोध का सामना करेगा (यूहन्ना 3:36)।

शुभ समाचार

जब मनुष्य अपने ही प्रयासों से परमेश्वर के न्याय से बचने का प्रयत्न कर रहा था, कोई उसको छुड़ाने के लिए आया, यही है यीशु मसीह, जो परमेश्वर का विशिष्ट पुत्र है। एक निष्कलंक पुत्र के रूप में उसने स्वयं को दे दिया, जो मानव के मृत्यु दण्ड को अपने ऊपर उठाने के लिए योग्य है। इस विशिष्ट मनुष्य के बारे में यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले ने कहा है:

"देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)।

उसने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर उठा लिया है, प्रेरित पतरस का कथन है:

"वह (यीशु मसीह) आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया" (1पतरस 2:24)।

पौलुस की यह घोषणा है:

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)।

पाप की दण्ड की कीमत, एक ही बार में हमेशा के लिए पूर्णतः चुका दिया है (इब्रानियों 9:12)।

यह शुभ समाचार कैसे सुसमाचार हो सकता है?

मृत्यु दण्ड की कीमत पूर्णतः चुका दिया गया है। पवित्र परमेश्वर और अधर्मी मनुष्य के बीच की दीवार को हमेशा के लिए हटा दिया गया है। पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर दिया है (यशायाह 59:2), परन्तु यीशु मसीह ने क्रूस पर मानव के बदले में मृत्यु सह कर इस अलग करने वाली दीवार को गिरा दिया है। व्यवस्था के नही मानने से जो शाप मानव के ऊपर आ गया था वह भी यीशु मसीह के मृत्यु द्वारा हटा दिया गया है। स्वंय स्रापित हो कर, मसीह ने हमें व्यवस्था के शापों से छुड़ा लिया है, क्योंकि बाईबल में लिखा है:

"जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्त्रापित है" (गलतियों 3:13)।

यीशु मसीह ने ही केवल, किसी मानव योगदान के बिना परमेश्वर के साथ शांति स्थापित किया है (1 तीमुथियुस 2:5)। बड़ी और असम्भव दीवार, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में मनुष्य की असफलताएँ व समस्याएँ और मनुष्य की निरर्थक प्रयास, इन सब का समाधान क्रूस पर यीशु मसीह ने सर्वदा के लिए कर दिया है।

"और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है"(कुलुस्सियों 2:14)।

"क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लियाः और अलग करनेवाली दीवार (जो शत्रुता की थी) को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं

विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया"(इफिसियों 2:14-15)

"कि जब हम पापी (परमेश्वर के शत्रु) ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा (बदले में)" (रोमियों 5:8)।

स्मरणीय निकास

कृप्या जरा सोचिये, उस मृत्यु रेल के उदाहरण को जो मृत्यु कैम्प की ओर बढ़ रही थी। उस निर्दोष व्यक्ति ने अपने जीवन को भेंट स्वरूप दे दिया, जिसके कारण न्यायाधीश ने यात्रियों को रेल गाड़ी से निकलने के लिए शर्त पारित किया कि जो बाहर निकलना चाहते है वे एक निर्धारित द्वार से ही निकल सकते है। यह निकास द्वार उस निर्दोष व्यक्ति की मौत को सम्मानित करता है जिसने सबके बदले में अपनी जान दे दी। क्या ही स्मरणीय निकास है! जरा सोचकर देखियें, उन लोगों के मन में क्या हो रहा होगा जो दण्डित किये गए थे परन्तु न्यायाधीश के आदेश को मान कर निकास द्वार से निकलकर स्वतंत्र हो गए।

इस उदाहरण के अनुसार, परमेश्वर ने अपने स्वर्ग के न्यायालय से एक आदेश दिया है। उसके सिद्ध न्याय के आदेशानुसार केवल एक मात्र स्वीकारीय द्वार है कि उसके द्वारा ही प्रवेश करें। इस प्रवेश द्वार के विषय में कोई समझोता नही है। परमेश्वर के निर्देश सत्य ही है, यात्रीयों को निकास के लिए अवश्य ही केवल एक ही द्वार से निकलना है। जो कोई भी स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है उन्हें अवश्य ही परमेश्वर के निर्धारित प्रवेश द्वार से ही प्रवेश करना है।

स्वर्ग का प्रवेश द्वार

परमेश्वर के नियम अनुसार, यीशु मसीह ने स्वयं कहा है:

"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता (स्वर्ग में) के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)।

लूका का कथन है:

"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों के काम 4:12)।

इसका अर्थ यह हुआ बिना यीशु मसीह के, कोई भी मनुष्य उद्धार नही पा सकते है और न ही कोई स्वर्ग में प्रवेश कर सकते है। स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने इसकी घोषणा की है और कोई छोटा मार्ग भी नही है, परमेश्वर ने जो कहा है वही उसका अर्थ है। द्वार का अनुसरण कर प्रवेश करें या फिर दूसरा द्वार खोज़ें और स्वर्ग से हमेशा के लिए बाहर रहें।

उद्धार कैसे प्राप्त करें

स्वर्ग में जाने का एक ही मार्ग है और वह यीशु मसीह के द्वारा ही है। यीशु मसीह ने कहा है: *"द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा" (यूहन्ना 10:9)।*

कैसे उस द्वार से कोई प्रवेश कर सकता है जिसे वह देख नही सकता है? जब कि यीशु ही वह द्वार है और यीशु मसीह पर केवल विश्वास करने से ही कोई भी व्यक्ति इस एक मात्र प्रवेश द्वार से प्रवेश कर सकता है। एक ही द्वार है, एक ही प्रवेश है, और एक ही विश्वास केवल यीशु मसीह में करना है। कितना विश्वास चाहिए? बहुत ही थोड़ा *"राई के दाने के*

बराबर'' (मत्ति 17:20)।

विश्वास का उदाहरणः पुराने नियम में इस्राएली लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा नही मानी, परमेश्वर ने न्यायानुसार उनके बीच में विषैले सर्प भेजे (गिनती 21:6)। सर्प ने बहुत लोगों को डंसा और मार डाला, तब पीडित इस्राएलियों ने अपने पापों को परमेश्वर के सामने मान लिया। परमेश्वर उन साँपों को अनुमति दे सकता था कि आज्ञा न मानने वाले इस्राएलियों को मिटा दें, परन्तु उसने ऐसा नही किया। परमेश्वर ने उन्हें नाश करने के बदले उनसे क्या किया? अपने अत्यन्त अनुग्रह में परमेश्वर ने मूसा से कहाः

''एक तेज विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा'' (गिनती 21:8)।

परमेश्वर की आज्ञा अनुसार मूसा ने वैसा ही किया। आपने देखा, मूसा ने परमेश्वर के निर्देश का पालन किया। अब इस्राएलियों की बारी थी कि वे भी परमेश्वर की आज्ञाओं को वैसे ही पूर्णतः माने जो मूसा के द्वारा दी गई थी। उनके पास चुनने की स्वइच्छा थी कि वे परमेश्वर की आज्ञा माने या फिर सांप के डसने से मर जाए।

वास्तव में, जो कोई भी सर्प द्वारा डंसा गया, जिसने परमेश्वर के अनुग्रह पर या उसके बुद्धिमता पर या उसकी आज्ञा की सरलता पर शिकायत नही की, परन्तु मूसा के द्वारा बनाए उस पीतल के सर्प को देखा वे जीवित बच गए (गिनती 21:9)। कितना सुन्दर है, कितना अदभुत है और कितना सरल था इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, इतना सरल कि बूढ़े और जवान दोनों ही केवल सर्प की ओर देखने से ही जीवित बच सकते है।

उसके अनुग्रह के निर्देश में किसी प्रकार का कार्य सम्मलित नही है। परमेश्वर ने किसी भी वाचा की मांग नही की है, कोई समर्पण नही,

कोई सामुहिक अर्पण या पुनःअर्पण की आवश्यकता नही है, कोई बपतिस्मा नही और कोई दंशमांश की भी मांग नही की है। प्रेमी परमेश्वर के न्यायालय कक्ष से क्या ही अनुग्रहकारी समाधान है। हज़ारों साल पहले जिस परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया, उसी परमेश्वर ने मनुष्य की निसहाय परिस्थिति के लिए एक ओर सरल समाधान दिया है।

परमेश्वर का पुत्र ऊंचे पर चढ़ाया गयाः

"और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्रा भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:14-15)।

यीशु मसीह को भी क्रूस पर ऊंचे पर चढ़ाया गया जब उसे क्रूसित किया गया। जिस प्रकार इस्राएलीयों ने मूसा के द्वारा ऊंचे पर चढ़ाया गया सर्प को देखा, आप भी क्रूस की ओर देख सकते है और केवल यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा ही आपको भी अनन्त जीवन मिल गया है, स्वयं परमेश्वर ने इसका निश्चय आपको दिया है।

जंगल में, इस्राएलीयों को केवल सर्प को देखना था, देखने में महत्व क्या है? कुछ भी नही है। क्रूस की ओर देखना, यह तो केवल विश्वास ही है। इसमें क्या कोई महत्व है? नही। महत्व तो प्रभु यीशु मसीह को ही जाता है। तब जंगल में परमेश्वर की छुटकारे के लिए निमन्त्रण कितना सरल था, अब भी परमेश्वर से उद्धार प्राप्त करना उतना ही सरल है। परमेश्वर कार्यो को सरल बनाता है, परन्तु शैतान और उसके सहयोगी परमेश्वर के उद्धार देने वाला अनुग्रह को जटिल बना देते है। उद्धार सरल विषय है, यह इतनी सरल हैः कि *"**"उस पर विश्वास करो"** न की "विश्वास करो और बपतिस्मा लो"* और न ही *"विश्वास करो और कलीसिया में जुड़ जाओं,"*

न ही *"विश्वास करो और निरन्तर विश्वास करते रहो,"* न ही *"विश्वास करो और पश्चाताप करो और फिर से विश्वास करो"* और न ही *"विश्वास करो और यीशु मसीह को प्रभु मानो"*। वह पहले से ही प्रभु है। विश्वास के लिए और कोई अर्पण की आवश्यकता नही है। उद्धार के लिए परमेश्वर का निर्देश स्पष्ट है:

"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है" (यूहन्ना 3:36)।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

"परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:31)।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता

क्या परमेश्वर झूठ बोल सकता है? कभी भी नही। ***"ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले,"*** **(गिनती 23:19)**।

यदि परमेश्वर ने कहा है, ***"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है"*** (और उसने कहा है: यूहन्ना 3:36), उसका अर्थ यही है। यदि परमेश्वर ने कहा है, ***"जो कोई उस (यीशु मसीह) पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए"*** (और उसने कहा है: यूहन्ना 3:16)। उसका अर्थ है कि जो व्यक्ति अपना विश्वास यीशु मसीह में रखता है, वह नरक में नही जाएगा, यह बहुत ही सरल है। दूसरी

ओर, यदि परमेश्वर ने कहा है, "जो यीशु मसीह में विश्वास रखता है और प्रभु स्वीकार करता है, और बपतिस्मा लेता है और उसको समर्पित रहता है, वे कभी नाश नही होंगें"। यदि आप अनन्त जीवन प्राप्त करने की आशा रखते है इन सब कामों के द्वारा तो कृप्या यह सब काम करें। कितना सरल है, क्योंकि परमेश्वर ने यह सब काम करने के लिए कभी नही कहा है! एक बात उसके वचन से स्पष्ट है:

"प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:31)।

यही है क्रियात्मक रूप में परमेश्वर का अनुग्रह।

एक व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण निर्णय

ठीक इसी समय, आप अपना सबसे बड़ा निर्णय ले सकते है जो आपके जीवन के भविष्य को सर्वदा के लिए बदल सकता है। कैसे? परमेश्वर पिता से ज़ोर से या मौन से कहने के द्वारा कि अब आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास करते है जो क्रूस पर ऊंचे पर चढ़ाया गया और आपके बदले में मर गया है। जिस समय आपने व्यक्तिगत रूप में यीशु मसीह में पूरा विश्वास किया, आपने परमेश्वर के वचन का पालन किया है, उसी क्षण से आपके भीतर उद्धार का आश्चर्यकर्म आरम्भ हो जाता है। एक व्यक्ति के जीवन में क्या ही महत्वपूर्ण यह पल होता है! एक जीवन जो आश्चर्यजनक रूप से परमेश्वर के अनुग्रह से सर्वदा के लिए छुड़ाया जाता है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है," (इफिसियों 2:8)।

यह आश्चर्यकर्मे क्या है? परमेश्वर आपके कमज़ोर विश्वास और मैले धार्मिकता के बदले अपनी सिद्ध धार्मिकता देता है, (रोमियों 3:22), जो धार्मिकता का आधार है। दूसरी बातों के साथ, वह आपको अपना अनन्त जीवन देता है(यूहन्ना 3:36)। उसी समय आप परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर लेते है और आपके अन्दर उसका जीवन भी आ जाता है। यह अनुग्रह दान परमेश्वर की ओर से आपके जीवन में जब पहली बार आती है तो आपको सर्वदा परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहने के लिए योग्य बना देती है।

आपने इनमें से किसी भी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए क्या किया है? कुछ भी तो नही। अतः हम बिना किसी विवाद के यह समीक्षा कर सकते है कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना आप उद्धार को कमा नही सकते है। इसके लिए कोई कर्म नही किया जा सकता है या अपनी योग्यता से उद्धार प्राप्त नही कर सकते है। यह बात यहाँ आकर ठहरती है, जो कुछ परमेश्वर ने किया है उससे बेहतर आप नही कर सकते है। परमेश्वर का कार्य पूर्ण और अटल है (रोमियों 11:29)।

यही है सुसमाचार, अवसर आ चुका है, अब आपको निर्णय लेना है। यीशु मसीह में विश्वास करने से ही उद्धार है, और केवल यीशु मसीह में ही। परमेश्वर का यही एक मात्र समाधान है बचने के लिए, उसके अनुग्रह के दान को स्वीकार कर लो और रूपान्तिरित हो जाओ या फिर उसके एक मात्र अनुग्रह के दान को तिरस्कृत कर अनन्त विनाश के परिणाम का सामना करों। परमेश्वर का निर्णय सदा स्थिर हैः

"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है"(यूहन्ना 3:36)।

अब निर्णय केवल आपको ही लेना है, इसलिएः

स्वर्गीय पिता परमेश्वर, हम आपके अनुग्रह के दान के लिए ध न्यावाद करते हैः आपके पुत्र यीशु जो क्रूस पर बलिदान हुआ है। हम आपका धन्यावाद करते है उद्धार को आपने बहुत ही सरल और सबके द्वारा प्राप्त करने योग्य बनाया दिया है। हम उनके लिए प्रार्थना करते है जिन्होंने इस सुसमाचार के सन्देश को पढ़ा है और अपने जीवन के सबसे बड़े निर्णय को नही लिया है। हमारी प्रार्थना है उन लोगों के लिए कि वे पूर्ण रूप से समझे और जाने कि आपके द्वारा दी गई अनन्त उद्धार के दान को स्वीकार करने या तिरस्कृत करने का अर्थ क्या है। कृप्या पिता परमेश्वर, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह में विश्वास नही किया है उनको चुनौती दे कि वे निरन्तर इस सन्देश को मनन करते रहे। यीशु मसीह के नाम से, आमीन्।

जिन्होंने विश्वास किया, उनके लिएः

परमेश्वर चाहते है कि आप अनुग्रह में बढ़े'' (2 पतरस 3:18)। वह चाहते है कि आप निरन्तर आत्मिक वचनों की शिक्षा प्राप्त करने की लालसा रखें (2 पतरस 2:2)। यदि आप चाहते है यह छोटी पुस्तिका और अन्य छोटी पुस्तकें प्राप्त करना जिससे आपके आत्मिक जीवन में सहायता मिल सकती है, इसके लिए आप अन्त में छपें या लिखें पते पर सम्पर्क करने से निशुल्क प्राप्त कर सकते है।

प्रार्थना निवेदन (केवल विश्वासियों के लिए)

''प्रार्थना में अपना समय बिताए, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो'' (कुलुसियों 4:2)।

''धर्मी जन (यीशु मसीह में विश्वास करने से धर्मी है) की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16)।

उसी समय हम सबके लिए भी प्रार्थना करें, (मोसस और ग्रेस इवेन्जिलिस्टिक मिनिस्टरीस को भी प्रार्थना में याद रखें) कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का मार्ग खोल दें, कि हम मसीह के भेद (कलीसिया युग की शिक्षा) की बातों को सुना सकें (कुलुसियों 4:3)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: (अपनी कलीसिया या संस्था का नाम व पता छापें या लिखें)

रेव्ह. डा. बी. वी. एस. एन. राव
प्रोग्रसिव फेईत मिनिस्रीज़
12, बेंक नगर, गुन्टुपल्ली
विजयवाडा, आन्ध्रा प्रदेश- 521241

मृत्यु रेल में यात्रा

लेखकः

मोसस सी.ओनवुब्लिका